(3)

उपलब्धि परीक्षण के उद्देश्य
"Aims of Achievement Test"

उपलब्धि परीक्षण शैक्षिक उद्देश्यों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। उपलब्धि परीक्षण के निम्न उद्देश्य निम्नलिखित है —

(1) छात्रों के बारे में जानना ⇒ उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से हम छात्रों के बारे में शैक्षिक स्थिति में बारे में पता लगा पाते है।

(2) छात्र के अध्ययन एवं वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना
उपलब्धि परीक्षण मुख्य उद्देश्य है छात्रों के अध्ययन क्षमता के बारे में पता लगाना। पढ़ाई में उनकी वर्तमान स्थिति क्या है, इसका पता लगाना

(3) अध्यापन संबन्धी कमियों का पता लगाना —
उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से अध्ययन का पता लगाने में सक्षम हो पाते हैं कि उनकी शैक्षिक शैली कितनी प्रभावशाली है या फिर उनकी खामियाँ है।

(4) छात्रों के समूह में तुलनात्मक अध्ययन करना —
उपलब्धि परीक्षण द्वारा विभिन्न छात्र समूहों के तुलनात्मक अध्ययन में सहायता मिलती है।

(5) पाठ्यक्रम के प्रभावों या इसमें खामियों का पता लगाना —
उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से प्रधान उद्देश्य पाठ्यक्रम की जाँच भी होता है। पाठ्यक्रम प्रभावशाली है या नहीं इसमें क्या खामियां है इत्यादि।

(6) विद्यालय के स्तर का पता लगाना — उपलब्धि परीक्षण का एक अहम उद्देश्य है, विद्यालय के स्तर का पता लगाना

जिस विद्यालय के परिणाम अच्छे होंगे वे स्कूल अच्छे मान लिये जायेंगे और जहाँ के परिणामों या उपलब्धियों में कमी होगी वे निम्न स्तर वाले मान जायेंगे।

~~उपलब्धि परीक्षण का पत्र लगाना~~

उपलब्धि परीक्षणों की र परिसीमाएँ

"Limitations of Achievement Test"

उपरोक्त विशेषताओं के होते हुए भी उपलब्धि परीक्षणों की अपनी कुछ परिसीमाएँ भी है — जो निम्न है

1 — ये परीक्षाएँ स्थानीय प्रयोग की दृष्टि से अनुपयुक्त है

(2) इन परीक्षाओं में प्राय समरूप परीक्षाओं का अभावरहता है (Parallel form of Test)

(3) उपलब्धि परीक्षाएँ विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले केवल कुछ ही विषयों के लिये प्राप्त हो कुछ विषय ऐसे भी होते है जिसमें इन परीक्षणों का निर्माण कार्य सरल

(4) इन परीक्षाओं का निर्माण, मूल्यांकन एवं व्याख्या, कठिन कार्य है। स्वयं ही इन परीक्षाओं के निर्माण में समय एवं शक्ति भी अधिक व्यय होता है।

(5) इन परीक्षाओं के निर्माण, प्रमाणीकरण, इसकी सामान्यक, निर्देश पुस्तिका आदि तैयार करने में बहुत व्यय होता है।

उपलब्धि एवं निदानात्मक परीक्षणों में अन्तर !

उपलब्धि परीक्षण	निदानात्मक परीक्षण
(1) इन परीक्षणों के माध्यम से छात्र की विषय विशेष की योग्यता का मापन किया जाता है। (छात्र कितना जानता है)	(1) इन परीक्षणों का उद्देश्य ऐसे कारकों तथा त्रुटियों को खोजना है जो छात्र की विषय की प्राप्ति में बाधक है (छात्र कितना नहीं जानता है)
(2) इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर परीक्षक अथवा अध्यापक छात्र की भावी व्यवसायिक चयन प्रक्रिया, नियोजन प्रक्रिया अथवा वर्गीकरण प्रक्रिया सुनिश्चित करता है।	(2) इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर अध्यापक छात्रों की कमजोरियों एवं कठिनाइयों के निवारण हेतु उपचारात्मक (Remedial) शिक्षण की व्यवस्था करता है
(3) इन परीक्षणों का विषय क्षेत्र (Content area) व्यापक होता है।	(3) इन परीक्षणों का विषय क्षेत्र सामान्यतः कुछ ही कौशलों (Skills) की प्राप्ति तक सीमित रहता है।
(4) उपलब्धि परीक्षणों के मानक राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किये जाते हैं।	(4) इन परीक्षणों के मानक स्थापित करना यद्यपि असम्भव तो नहीं फिर भी, ऐसा करना आवश्यक नहीं यह सम्भव भी प्रतीत नहीं होता कि इस पूरे देश के छात्रों की किसी विषय विशेष सम्बन्धी कमियों का एक आतिशी

उपलब्धि परीक्षण	निदानात्मक परीक्षण
	न्यादर्श (Representative Saple) प्राप्त कर सके
(5) इन परीक्षणों के शतांशीय मानक (Parcentile Norms) तथा ग्रेड तुल्य मानक (Grade equivalent) आसानी से तैयार किये जा सकते है।	(5) इन परीक्षणों के लिये ये दोनों ही प्रकार के मानक स्थापित करना सम्भव नहीं है
(6) ये परीक्षण कक्षा के प्रत्येक विद्यालय पर प्रशासित किये जा सकते है।	(6) ये परीक्षाएं केवल उन्ही ~~विद्या~~ विद्यालयों दी जाती है जो कक्षा में अपेक्षित व्यवहार करने में कठिनाई का अनुभव करते है।
(7) इन परीक्षणों का अंकन, प्रशासन एवं व्याख्या सरल है।	(7) इन परीक्षणों का अंकन प्रशासन एवं व्याख्या कठिन है
(8) इन परीक्षणों में समय एवं शक्ति अल्प मात्रा में व्यय होती है	(8) इन परीक्षणों में समय एवं शक्ति अधिक मात्रा में व्यय होती है।
(9) इन परीक्षणों के सफलतापूर्वक के लिए अध्यापक को किसी विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती।	(9) इन परीक्षणों के सफलतापूर्वक के लिए अध्यापक को किसी विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है
(10) इसमें समय सीमा होती है।	(10) इसमें समय सीमा नहीं होती है।
क्रमशः	क्रमशः

Scanned with CamScanner

o Standardiz

मानकीकृत परीक्षण

अर्थ :- "मनोवैज्ञानिक परीक्षण मानकीकृत होते हैं कारण उसका अपना निश्चित मानक होता है। उसका अंकन का तरीका पूर्व निर्धारित होता है।

(A) प्रीमैन (1965) ने इस विचार का — "मनोवैज्ञानिक परीक्षण वह मानकीकृत यंत्र है जिसका निर्माण और प्रयोग का के एक या अधिक पक्षों का वस्तुनिष्ठ रूप से व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं अथवा दूसरों के प्रतिदर्शों द्वारा मापने हेतु किया जाता है।"

रेबर तथा रेबर (2001) - "मानकीकृत परीक्षण का तात्पर्य उस परीक्षण से है जिसका निर्माण पूर्ण आनुभाविक विश्लेषण आधार किया गया हो जिसके मानक के रूप पहले से निर्धारित हो गया है तथा विश्वसनीयता एवं वैधता की किसी मूल्यांकन उपलब्ध हो।"

परीक्षण तथा मापन में अन्तर

(Difference between Test and Measurement)

(1) मापन का अर्थ नियमों के अनुसार संख्या प्रदान करने की प्रक्रिया है दूसरे शब्दों में किसी गुण या विशेषता को मात्रात्मक रूप में प्रस्तुत करने की क्रिया को मापन कहते हैं। इसके विपरीत परीक्षण एक यंत्र है जिसके द्वारा मापन किया जाता है। कोई भी वस्तु की मात्रा में कितना मापन कहलाता है और जिस यंत्र के सहारे से यह मापन किया जाता है उसे ही परीक्षण कहते हैं।

② मापन का उपयोग भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक गुणों एवं विशेषताओं दोनों के लिए किया जाता है। दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग मुख्य रूप से व्यक्ति के मानसिक गुणों एवं विशेषताओं के मापन के लिए किया जाता है।

③ मापन में किसी भी स्केल पर एक निरपेक्ष शून्य मान लिया जाता है दूसरी ओर किसी मनोवैज्ञानिक परीक्षण में निरपेक्ष शून्य नहीं पाया जाता है।

④ मापन का संबंध किसी सामान्य समस्या के

⑤ मापन अमूर्त होता है जबकि परीक्षण मूर्त होता है।

⑥ मापन में व्यावहारिक पक्ष गौण होता है जबकि परीक्षण

⑦ में पक्ष मुख्य होता है।

आभार

16 मनोवैज्ञानिक परीक्षण के प्रकार का वर्णन करें ⟹

मनोवैज्ञानिक शोधों या अनुसंधानों में कई तरह के मनोवैज्ञानिक परीक्षण की आवश्यकता के अनुसार किया जाता है। इनमें निम्नलिखित परीक्षण विशेष से महत्वपूर्ण है।

① बुद्धि-परीक्षण (Intelligence Test)